कैसे चल दिया, तू हार स्वीकार के

हो परेशान जगत के तिरस्कार से।
कहाँ चल दिया तू अपनी शक्ति नकार के।
कैसे चल दिया, तू हार स्वीकार के।

चल उठ फिर प्रयास कर।
चल उठ,जग में प्रकाश कर।
चल उठ फिर अपनी ऊर्जा का प्रचार कर।
कैसे चल दिया, तू हार स्वीकार के।

अपने लक्ष्य से अनुरक्त हो,
अपनी हार से विरक्त हो,
कलम तेरी सशक्त हो।
कैसे चल दिया, तू हार स्वीकार के।

डॉ कंचन जैन "स्वर्णा"